

## **रवीन्द्रनाथ टैगोर का जीवन परिचय :शिक्षा दर्शन**

**DR. FOZIA BANO  
ASSOCIATE PROFESSOR  
DEPARTMENT OF HISTORY  
SHIA P.G. COLLEGE, LUCKNOW**

### **सारांशः—**

रवीन्द्रनाथ टैगोर का भारतीय शिक्षा तथा कला ds {ks= e॥ vR; Ur egRoi wL LFku gS muds nkjk अपनाया गया शिक्षा दर्शन में आत्म विकास बौद्धिक उन्नति 'क्षज्जह्यं d mlufr ekuork ds i fr i e विष्व बन्धुत्व स्वतन्त्रता कलात्मक रचनात्मकता नैतिकता धार्मिक शिक्षा सामाजिक उन्नति आदर्श तत्व g॥ m॥होने शिक्षा के माध्यम के fy, {ks= h; Hkk की नीति को अपनाया तथा ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के लिए आवधक प्रयत्न तथा प्रयोग किए। प्राकृतिक माहौल में रहकर शिक्षा प्राप्ति करने पर बल दिया तथा विष्व भारती 'षान्ति निकेतन श्रीनिकेतन शिक्षासत्र जैसे विद्यालय स्थापित करके देष के सामने आदर्श स्थापित किया। उन्हें साहित्य भारतीय शिक्षा में उनके प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

अपने काव्य—संकलन 'गीताजंलि' के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित विष्वभारती 'क्षज्जह्यं fudru ds I Lfkki d dykf/ki fr johUnukFk Bkdj dk tle dydRrk ds , d i jkks I klr i fjokj e॥ gvk FkA johUnukFk Bkdj dk tle 6 ebz 1861 dks tKMKH kdk dydRrk ds i f'd edku e॥ gvk FkA mudh eka dk uke 'क्षज्जनक नोह FkA 'क्षज्जनकनोह ds ckjs e॥ cgr de tkudkjh i klr gksh g॥ रवीन्द्रनाथ कवि और दार्शनिक थे।

नोहUnukFk Bkdj ds ?kj ds I क्षह्यिक सांस्कृतिक और धार्मिक वातावरण का प्रभाव षषु रवीन्द्रनाथ पर पड़ना स्वाभाविक ही था। रवीन्द्रनाथ को प्रारम्भिक शिक्षा के बारे में परस्पर विरोधी बातें होती हैं। कुछ पुस्तकों में इस बात का उल्लेख मिलता है कि जब रवीन्द्रनाथ पाठ्याला जाने के लायक हुए rc mudk uke caky , dMeh e॥ fy[kk; k x; k fdUrq ogka ds okrkoj.k dk i Hkko mu ij vPNk ugha i MKA mlugkus egl || fd; k fd Ldly dk okrkoj.k muds vuply ugha g॥ ml Ldly e॥ fo | kfFk k ds [ksy&dn dk mfpr i dk ugha FkA i gy jfolnukFk dk nkf[ksy dk dydRrk Vfuk अकादमी में हुआ। फिर कुछ समय वे नार्मल स्कूल के छात्र रहे जहां उनकी बंगला—शिक्षा की पुरखा cfu; kn r॥ kj g॥

cpi u I s ghj johUnukFk dh dYi uk& vR; r I qe FkA i kdfrd I kñ; Z dks ns[kdj os eu ugh eu अतिषय प्रसन्नता का अनुभव करते थे। एक बार कलकत्ते में प्लेग की chekjh QsyhA bl dkj.k mlugks ckjgj unh ds fdukjs fLFkr , d [kcl jir egy e॥ jgus dk I kshkX; i klr gvkAfir us i f dk i fjp; djk; kA johUnukFk vi usfi rk ds idfr&i e vkJ I kñ; &ckjk I s cgn i Hkkfor gq FkA johUnukFk dks Ldly tkdj i <us I s ?kj. k FkA bl xgjh fojFDä ds dkj.k mlugkus , d fnu Ldly tkuk fcYdly gh NKM+fn; k rc nohUnukFk us mudh i <kbz ds fy, ?kj i j gh शिक्षक नियुक्त किये। रवीन्द्रनाथ कुषाग्र तो थे ही धीरे—धीरे विज्ञान इतिहास कला एवं संस्कृत सभी i j mudk vf/kdkj gks x; kA fgeky—यात्रा से लौटते ही मानो रवीन्द्रनाथ का बचपन समाप्त हो गया। वे किषोरावस्था की ngylit dks Hkh vkuu&Qkuu yk?॥ x; A muकी पहली प्राकाषित कविता 'अभिलाष्ट' FkA tks rRockf/kuh i f=dk e॥ vxgk; .k 1281 e॥ Nih FkA dN yksks dh ekU; rk g॥ fd mudh i gyh प्रकाषित कविता 'भारतभूमि' थी जो 'बंगदर्शन' में 1874 में छपी थी। उनकी दूसरी प्रकाषित कविता dk uke FkA 'i dfnj [kn^A ; s nkuks dfork, amlgkus , d fonTtu dh I Hkk e॥ i < k FkA

rc johUnukFk dh mei dly pkfng I ky dh FkA 1873 e॥ fgeky; I s yk/us ds ckn 1878 rd bXyM tkus I s i b dli bl vof/k ds chp mudk tks Hkh yksku gvk og ^dfodkfguh^, ॥1878॥ ^cuQy^ ॥1880॥ vkJ नामक संग्रहों में संकलित है। बैकौल रवीन्द्रनाथ उनके 'बंगदर्शन' ने बंगालियों dk fny thr fy; k FkA johUnukFk vi uh dforkvks dk rkuk&ckuk dkey Hkkoukvks , oI I qe dYi ukvks ds /kksx I s cplrs FkA johUnukFk dh I kfgfr; d xfrof/k; k fnu i j fnu c<fr tk jgh

थीं। लेकिन उनकी औपचारिक शिक्षा की प्रगति अत्यंत मंद थी। कुछ दिनों के लिए वे सेट जेविर्स Ldly Hkh x; s Fks yfdu vfū; fer mi fLFkr ds dkj.k Ldly tkus dk mudk og de Hkh cn gks गया। कुछ दिनों तक रवीन्द्रनाथ अपने भाई सत्येन्द्रनाथ के साथ अहमदाबाद रहे जहां वे सेषन जज थे। सत्येन्द्रनाथ के विषाल पुस्तकालय ने रवीन्द्रनाथ को यह अवसर दिया कि वे जो चाहें पढ़ें। johUnukFk tc v1 c) v1; u e1 vi us fnu fcruk jgs Fks rHkh muds cM+Hkkbz I R; UnukFk us muds l keus bXySM tkus vkJ ogka odkyr dh i <kbl djus dk i Ldko j [kk FkkA johUnukFk 1878 e1 I R; UnukFk ds l kfk mlgkus bXySM ds fy, i Ldkku fd; kA bXySM e1 johUnukFk dk nkf[kyk i gys , d i flyd Ldly e1 vkJ fQj ; fuofl &h dklyst ynu e1 gvkA ogka Hkh os i kB; de i jk u dj l ds vkJ M+I ky ckn Hkkj r ykV vk, A 'भारती' में प्रकाषित 'यूरोप' प्रवासीर पत्र' इस बात का प्रमाण है कि अठारह महीने के संक्षिप्त समय में भी रवीन्द्रनाथ अपने ग्रहणषीलark fneke ds pyrs bXySM ds thou vkJ l ekt l s fudV i fjp; LFkkfir djus es I Qy gq FkkA रवीन्द्रनाथ इगलैण्ड से बगैर किसी डिग्री या व्यावसायिक योग्यता के लौटे थे। वहां पञ्चिमी संगीत के i fr mue1 xgjh&vfhlk: fp dk foekl gvkA bXySM es mlgkus l &hr e1 xtkhj v1; u fd; kA स्वदेष ykl/us i j mlgkus 'okYehfd i frHkk^ 1/1881% uked , d l &hr&ukVd fy[kkA bl rjg johUnukFk us caky dh l &hr i ja jk es uohu ; kxnu fd; k FkkA 'ckfYedh i frHkk^ dk epu fonku dh l Hkk ds l efk fd; k x; k vkJ johUnukFk us bl e1 ckfYedh dh Hkkedk fuHkkbA rnqjkr johUnukFk us vi us vi dks ijh rjg l &hr vkJ l kfgR; ds fy, vfi l dj fn; kA ml h l e; 1882 e1 ^ k; l &hr^ fy[kk x; kA bl ds ckn 1883 e1 ^ Hkkr l &hr^ l keus vk; kA johUnukFk dk ys[ku xfr i dM+jgk FkkA , d ds ckn , d mlgkus 'Nfo vksxku^ 1/1884%, ^idfrj प्रतिषोध' (1884) , ^dM+ vks dkey^ 1/1886%, ^ek; kj [ksy^ 1/1888% vkJ ^ekul h^ 1/1890% dh jpuh dh A buds l kfk&l kfk mudk x| ys[ku Hkh vck/k xfr l s pyrk jgk FkkA dgkfu; ka mi U; kl ds vykok mlgkus ml dky&[kM es ys[k vkJ vkykpuh, a Hkh fy[kh FkkA rbl l ky dh mez e1 johUnukFk dk foog e1 kfyuhnph l s gvkA muds dk0; &i z kl i &br tkjh थे। विवाहोपरांत उन्होंने पिता की विषाल सम्पत्ति तथा अन्य जिम्मेदारियों में हाथ बंटाना का dj fn; kA os noUnukFk Bkdj ds vklfn cgk1 ekt ds l fpo Fks vkJ vi uk dke mRl kgivob fd; k djrs FkAb1 h l e; johUnukFk ds thou dk , d u; k v1; k; ' का gks x; kA fl rcj 1880 e1 I R; UnukFk ds l kfk mlgkus bXySM dh n1 jh ; k=k dh A os dso , d eghuk ogka jgA væc1 e1 पिता के निर्देष पर उन्हें पारिवारिक संपत्ति समालने के लिए भारत लौट आन्क i MKA fn'tUnukFk ds i f= l &hUnukFk nkjk l i fnr i f=dk ^ l k/kuk^ ds i e1k l g; kxdrk johUnukFk FkkA 'साधना में प्रकाषित उनकी कहानियों लेखों और कविताओं में रवीन्द्रनाथ की प्रतिभा के सभी रंग जगमगाए हैं। 'साधना में शिक्षा संबंधी उनके प्रौढ़ fopkj l keus vk, vkJ bl h e1 mlgkus jktuhfrd cgl a pky^ dha शिक्षा और राजनीति संबंधी ये विचार मजबूती से व्यक्त किये गए। 1892 में अपने एक लेख 'शिक्षार हेरफेर' में उन्होंने शिक्षा के माध्यम के रूप में caky dks vi ukus dh odkyr dhA इस देशभक्तिपूर्ण उभार का परिणाम था देष का विभाजन (1905)। आधुनिक युग की 'धुरआत ब्रिटिष 'बासकों पर विष्वास के साथ हुई थी। उस समय रवीन्द्रनाथ आत्मनिर्भरता अथवा अपनी 'फ़ा i j Hkj k djs i j tkj ns jgs FkkA 16 vDVicj 1905 dks caky dks foHkkftr dj caky; ks dks detkj djs dk vks tks dk edl n , dne FkkA i j s caky l s fojksk ds Loj mBA vi uh i f=dk 'बंगदर्शन' में रवीन्द्रनाथ ने लिखा इस ckr dks ; kn j [kus vkJ करने के लिए कि ईश्वर ने बंगालियों dks foHkkftr ugha i fik fd; k g1 ge1 , d fnu r; djuk pkfg, ft l fnu ge, d &n1 js dh dykbl i j i hyk /kxxk ck/kA ; g fnu , d&n1 js ds l kfk ciku ei c/kus dk i rhid gksxkA bl fnu ds dhfrkku ds fy, johUnukFk us dbz vkJ yksxk ds l kfk feydj ^c3ykJ ekVh ^c3ykJ ty^ uked &hr jpkA bl vol j i j vk; kfr vud l Hkkvka vkJ ty1 k e1 mlgkus भाग लिया। क्योंकि इसी अवसर पर विदेशी को अस्थीकार करने और देशी को स्थीकार करने की मार

C<॥ नेष्ठनल कौसिल आँफ एजुकेषन की स्थापना हुई जिसका उद्देश्य था शिक्षा की ब्रिटिष व्याख्या को हटाकर उसकी जगह देशीय शिक्षा नीति को ले आना। इस प्रयास से भी johUnpkFk tMs FkA नेष्ठनल कौसिल आँफ एजुकेषन से जादवपुर विष्वविद्यालय पैदा हुआ।

वर्तमान सदी के प्रथम दशक में रवीन्द्रनाथ अनेक सामाजिक आंदोलनों से जुड़े रहे जिससे उन्हें अपने देष को उसे वर्तमान को अतीत से जोड़कर गहराई से जानने का मौका मिला। इस समय भारतीय प्रकृति और भारतीय इतिहास की परंपरा में वे नई सार्थकता तलाश रहे थे। उन्होंने bfrgkI e; g yxkrkj i rk होता जा रहा था कि भारतीय भूमि पर विभिन्न प्रजातियों की एकता के जरिए इष्टर अपना कोई महान उद्देश्य मूर्त कर रहा है। सभी प्रजातियों की एकता का क्षेत्र यहां तैयार हुआ था D; kfD Hkkj rh; vk; kfRed i; kl k dk y{; Hkk , drk gA bfrgkI e; देषीय thou ds xgu vfkI dh mudh तलाश के साथ व्यक्तिगत जीवन में भी एक गहरा आध्यात्मिक आकुलता के दर्शन होते हैं। संभवतः परिवार में एक के बाद होने वाली मौतों ने उन्हें जीवन का रहस्य तलाशने के लिए प्रेरित fd; k gkA 'ns k^ vlf^ 'xhirktfy^ , jktk^ vlf^ 'डाकघर' में उनकी आध्यात्मिक आकुलता उन्हें दृष्टि जगत के पार अदृष्ट में ले गई। पूर्ववर्ती दौर की सौंदर्य की खोज अब सौंदर्य के पार क्या है इसकी [kkst e; cny xbA thou dh /kkj .kk e; {kkh k vlf eR; q dh /kkj .kk xgjs | ek xbA Lorfrk vknkyu dh Vdjkko Hkjh xfrrfot/k; k dh mRrstuk | s mlgkuvi us vki dks gVk fy; k 'kfrfudru ds , dkr e; je x, vlf ogha vi us dk; dE की गतिविधियों में अपनी पूरी फ़ा dfr dj nhA fl ; kyng e; i kJ Ehk fd, x, xkeh.k i pfuek.kl ds muds vu; i; kl vck/k xfr | s pyrs jgA pklo tlefnu ds vol j ij 1911 e; HkO; i kkus i j joHnukfk dk tlefnu | ek kg vlf; kftr gA। यह आयोजन बंगीय साहित्य परिषद- ds okrkoj.k e; gvk vlf jkethl u; nj f=-onhi tfLVI 'l nkj npj.k fe= vpkp; z i Qlyplnz ckl e. ktlUnplnz ulnh vlf vu; i; ; kr ykxka us 0; oLFkk dh ns ktkk y dh A

1912 eej jo hUnukFT इंग्लैण्ड की तीसरी यात्रा पर गए। ; k; n ; k; gh ?keu&fQjus ds vfrfj ä mudh नजर में और कोई उद्देश्य न था।

मल्लुहि ओहा। नहीं। से गहि तकम्भि कदक्षि द्वि बक्कड़ि द्वि वक्षि। कृष्णरेदि; एवि उसि तुक्करेदि; कृष्णकु द्वि फ्यि, तक्कु तक्रसि फ्लक्का वूहुनुक्कफ्का नक्कज्जि हक्करहि; द्वि एवि, द्वि उ, ; कृ धि इग्यि द्वि दक्कज्जि.क द्विरेदि गतिविधियों के केंद्र के रूप में ठाकुर परिवार की प्रसिद्धि विदेषों में पहुंच चुकी थी। जिसके कारण घर में देष और विदेष के अनेक विख्यात विदृग्न लोगों का आना-जाना लगा रहता था। वस्तुतः इफ्लि) द्विक्कल वक्कुल्लि डेक्कज्जि लोक्कहि वक्षि फ्लि ल्लव्वज्जि फ्लुफ्नर्क ब्लि इफ्जोक्कि द्वि दक्कोहि द्विहच्च फ्लक्कि ब्लि हि दक्कज्जि.क द्वि जोहुनुक्कफ्का धि। कृष्णरेदि; द्वि मि यैफ्कि.क; कृ द्वक्षि उत्तन्हि। से तक्कु। द्विएक्कज्जि लोक्कहि उसि जोहुनुक्कफ्का धि द्विफॉर्क्कव्वक्का द्वि वुप्पक्कनि टेक्मुल्लि फ्ल०। एवि फ्लि; कृ राज्जहक्कु ब्लि हि। ए; बफ्रग्कि। पुक्कफ्कि। जूदक्कि उसि जोहुनुक्कफ्का द्वि दब्लि। क्यूक्का के कार्य का अंग्रेजी अनुवाद एक साथ प्रकाशित किया।

bl l cdk es+g mYys[kuh; gfd johUnukFk us vi uk ^vpyk; eru^ ॥1912॥ ; nukFk l jdkj dks l efi r fd; k gA bl rjg johUnukFk ds dk; k l s xj cdkyh i kBd i ffpgr g+A johUnukFk tw 1912 es bXaySM i gpA johUnukFk us j kfklVhu dks vi uh dforkvk dk lo; dr vupkn i <us dks fn; kA j kfklVhu ds ?kj i j /khj&/khj s johUnukFk vurd dfo; k vks cf) thfr; k ds l a dZ es vk, A bue l okf/kd mYys[kuh; nks ykx FkA , d rks Fks dfo MCY; w oh ; vt ftudh fy [kh xkrktfy की भूमिका ने रवीन्द्रनाथ की तरफ पञ्चम का ध्यान [khpus es cMh Hkfedk fuHkkbaA n j s Fks l h , O , Mlt tks रवीन्द्रनाथ और गांधी जी के परम प्रबंसक बने। इसके बाद इंडिया सोसाइटी ने 'गीताजलि'

dk , d lldj.k Nki kA fp=lxnk^, ^ekfyuh^ vkj Mkdk?kj^ ds Hkh vupkn gq A johUnukFk dks , d egku dfo vkj cf) thoh ds : lk eLohdkj fd; k tkus yxka रवीन्द्रनाथ इग्लैण्ड से अमरीका गए। रवीन्द्रनाथ तअरबाना में इलिनाय विष्वविद्यालय के छात्र थे। रवीन्द्रनाथ को उस देष के अनेक हिस्सों से ckyus dk fue=k.k feykA vejhdk l s yk/dj bkySM eLmUgkus dgus dh , d J[kyk i Ltr dha væc 1913 eL os Hkkjr yk/dj vka, A नवंबर में विष्व का सबसे बड़ा साहित्यिक पुरस्कार नोबेल पुरस्कार रवीन्द्रनाथ को प्राप्त हुआ था। 1916 में रवीन्द्रनाथ पुनः विदेश गए। हालांकि ^xhfrekY; ^ vkj ^xhirkhy^ 1/1914^ ^xhirkty^ dh gh 'ली में लिखे गए। विचारों के बाद के साथ 'सबुजपत्र' का प्रकाष्ण 'क्षु gvkA johUnukFk dh tks कविताएं इस पत्रिका में प्रकाषित हुई वे बाद में 'बलाका' में संग्रहित हुई। वे 'गीतांजलि' के vkl; kfRed okrkoj.k l s ckgj fudy vka, A prjx 1/1916^ ?kjs ckbjs 1/1916^ t s miU; kl ^i cft i =^ eL i = /kkj kokfgd : lk से प्रकाषित हुए। bues johUnukFk ds fopkj ei u; k i fforl i dV gvkA johUnukFk ds ekul ds fodkl dk ; g , d egRoi wkl pj.k gs l kfk gh ckyk l kfgR; eL , d egRoi योगदान भी 1916 में ही प्रकाषित 'फाल्गुनी' में रवीन्द्रनाथ ने 'बलाका' में कविता के माध्यम से प्रतिपादित जीवनदर्शन को नाटक का रूप प्रदान किया। 1916 में जापान जाने से पहले johUnukFk foHklu txgk i j ?kje pdps FkA os tki ku l s vejhdk x, vkj ekpl 1917 rd rdjhcu दस महीने वे देष के बाहर रहे। इस यात्रा के बाद उन्होंने कई चीजों के बारे में फिर से सोचना क्षु fd; kA bl ; k=k eL muds l kfk Hkkjr dks pkgus okys nks bkySM okl h fe= fofy; e fi ; l u vkj , Mf FkA bu ykxka ds vfrfj ä bl i kvh ds l kfk ukstoku dykdkj edpy+Ms Hkh FkA tki ku eL mUgkus jk" द्वाद का उन्माद देखा। तकरीबन डेढ़ दशक पहले कलकत्ता में ओकाकुरा के tfj, tki ku h l k dfrd thoh l s i gyh cky os i ffpfpr gq Fks vkj bl ds i gyvka l s i Hkkfor हुए थे। इसी कारण उन्होंने एक के बाद एक 'नेषनलिज्म' के लेख उसी समय से लिखना शुरू किया और इन्हें अमरीका में भी पढ़ा। 'पर्सनैलिटी' (1917) नामक संग्रह में उनके द्वारा अपेक्षित विष्व के आदर्श वैयक्तिकता की प्रकृति वयक्ति और विष्व के बीच संबंध t s h ckrk i j vejhdk eL fn, x, muds oDr0; l dfyr gA जब वे देष लौटे तक jkt ulfrd ekgk y mfk & ifky l s Hkkj FkA mUg yxk fd bl eL mUgk dkbl Hkfedk fuHkkku pkfg, A muds dk; kL eL l s , d Fkk 3 ebl 1919 dks नाइटहुड की पदवी लौटा देना जो उन्हें 1915 में प्रदान की गई थी। बातचीत के जरिए स्वषासन i klr djus dh psVka gks jgh Fkha tcfld mRi kgh vkj v/khj ; pk l epnk; us cy i z kx ds tfj, सत्ता छीन लेने के उद्देष्य के प्रति अपने को समर्पित कर दिया था। 1918 dks tgka विष्वभारती की स्थापना हुई। रवीन्द्रनाथ ने विष्वभारती का उद्देष्य ज्ञान का सृजन अर्थात् 'क्षु vkj v/; ; u jk' किया था। इसी के साथ कलाभवन के तत्वावधान में संगीत और कला की विष्व dk 0; oLFkk Fkha dykHkkou dks ulnyky cky l jhUnukFk dj vfl r gy/kj vkf dh l ok, a i klr Fkha 1/1921^ dks johUnukFk us , d [kk समारोह में इस संस्था को समर्पित किया। उसी दिन विष्वभारती l k kbVh xfBr gpl ft l dk l pkyu i gys l s r; fu; ek&fotu; ek l s gkuk FkA bl l ekjk g dh अध्यक्षता दार्शनिक ब्रजेन्द्रनाथ सील ने की। उसी समय विष्वभारती में ग्रामीण पुनर्निर्माण और ग्रामीण fodkl uked nks egRoi wkl foHkkx vflR Ro eL vka, A fi ; l u ds ckn fy; kukMZ , egLVZ bl l LFkk bl l LFkk eL kfey gq FkA 1920 eL vi uh vejhdk ; k=k ds nkku johUnukFk dh , egLVZ l s Hkk/ gpl Fkha 1921 eL tc ; pk , egLVZ us johUnukFk ds xkeh.k fodkl dk; bde eL enn djus ds उद्देष्य से भारत आने का निर्णय किया तब श्रीनिकेतन क्षु fd; k x; kA 6 Qjojh 1922 dks l q y dh Jhfudru dMh eL xkeh.k i pfuLk dk l s LFkkfi r gvk vkj bl rjg xkeh.k l kfk ds dk; l विष्वभारती के क्षु{kd i z k l k l s tM+x, A 'क्षुfrudru vkj Jhfudru nkuk eL xfrfotu; kL dL दिषा एक दूसरे से एकदम अलग Fkha 'क्षुfrudru dh xfrfotu; kL eL mPprj vdknfed vuLkku i phz vkj i ज्यमी संस्कृतियों पर 'क्षु{k dk jus में रवीन्द्रनाथ षामिल थे। रवीन्द्रनाथ ने चाहा कि श्रीनिकेतन हमारे देष के दरिद्रताग्रस्त ग्रामीणों

dk s v kRefuHkj cukus dk i t kl djA xkeh. kka dks df" k c udkjh dk" Bdyk dh rduhdka l s bl  
तरह षिक्षित किया जाए कि वे दूसरों पर निर्भरता से मुक्ति प्राप्त करने की मानसिक और 'kkjhfjd  
vk/kkj i j षिक्षक = dh dyi uk की गई। 1924 में षांतिनिकेतन के बाहरी हिस्से में षिक्षाग्रस्त की  
स्थापना की गई। इसका उद्देश्य था छात्रों को ऐसा प्रषिक्षण देना जिससे वे जीवन में कोई स्वतंत्र  
0; ol k; djus eI l fe gkA t ks 0; ol k; ykx fd; k x; k ml eI i j h{kk dk dkbl i ko/kku ugha Fkk  
bl u, l थान की बागड़ेर संतोषपुर्णतेनक्ज dks l k h xbA 1927 में षिक्षासत्र खर्फुदश्रु dks  
सौंप दिया गया जिसका यह प्रषिक्षण केंद्र बन गया।

vi us ysk Hkkjr ds dnz | Ldfr^ es johUnukFk us v/ ; u ds , d u, dnz dks LFkkfi r djus okys i jd fopkjka dks I ||c) djus dh i z Ru fd; k | विदेश की एक और यात्रा की उन्होंने तैयारी dh vkJ 1920 es os bkyfM ogha I s Qkd gkYf.M cfYt; e vkJ vrre% vejhdk x,A ; g mudh rhl jh vejhdk ; k=k FkhA वे अनेक जगहों पर बोले और हर कहीं विष्वभारती का उल्लेख किया। अग्रेंजों ने ब्रिटिश ताज द्वारा प्रदत्त नाइटहुड लौटाने के उनके कार्य को कभी सदाषयतापूर्वक ग्रहण ugha fd; kA bl h rjg vejhdk i frfdz k es Hkh xekbV dhi deh FkhA os vejhdk I s bkyfM gkrs gq Qkd yks/s vkJ ogka I s teuh fLoVtjyM Muekdz LohMu vkJ fOj teuh Qkd gkrs gq Hkkjr yks/vk, A , d I ky दो महीने वे विदेशों मे रहे यानी मई 1920 में वह यूरोप के लिए चले थे vkJ tkykbz 1921 es Hkkjr yks/vk, A ; jks es mudk 'kkgh Lokxr gvkA bl ; k=k es fn, x, Hkk" k. k fdz fVo ; fuVh^ es I kfgr gftues I koikkfedrk dhi xit vkJ ekuo I enk; dhi , drk का संदेश सुनाई पड़ता है। इस दु"dj ; k=k ds ckn Hkh os Hkkjr ds vuad njLFk LFkkukd dh ; k=k fudv x,A

इस समय भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी दिषा परिवर्तन हुआ। दक्षिण अफ़्रीका से महात्मा गांधी भारत  
 ykS vpdls Fks vkg vklUnksyu dk usRo | lkky fy; k FkkA johUnukFk i gys igy xk/kth | s 1914 e  
 feys tc , M~~it~~ dh igy ij xk/kth fQfudl Ldly ds cPpk dks ~~kfrfudru~~ ys x, A ; s cPps  
 nf{k.k vQhdk l s Hkkjr vk, FkkA 1921 e; johUnukFk ; jks dh , d ; k=k l s yVdj vk, A mUgkus  
 विष्वभाजी रह e; ijh nfu; k dks , d | FkkA ykus dk l i uk ns[kk FkkA muds vuq kj vI R; l s yMkbz  
 vkg | R; l s l g; kx djuk pkfg, A 6 fl re; 1912 dks tKMH kdk ds fofo= Hkou e; johUnukFk  
 vkg xk/kth ds chp , frqkfl d okrklyki qvkv FkkA

1916 में जब रवीन्द्रनाथ ने विष्वभूमण किया था तब से पूरी दुनिया को प्रभावित करने वाले प्रश्नों में वे गहरे डुबे रहे। देष लौटने पर उन्होंने अपने आपको इसके प्रति पुनः समर्पित किया और 'पूर्वी' की dfork, a i dV gþA bl h chp mlglkus ^i ykrldk^ 1/1918½ vlf , d ulVd ^eþA/kkj k^ 1/1922½ Hkh fy [k fy; k Fkka eþA/kkj k es jk"Vtogn i j muds fopkj i frfcfcr qq qg

fl r̥c̥j 1924 e̥ os enkl I s pyA LoLFk u gkus l̥ os i̥ u i̥ gp l̥ ds v̥kj vt̥huk e̥ : d x, A C; ul̥ vk; l̥ z l̥ s yks/rs g̥l̥ johUnukFk bVyh x, 1925% os dN gh fnu ogk : ds yfdu Hkkj r̥ yks/rs g̥t̥ उन्हें इस देष की दोबारा यात्रा का निमंत्रण मिला। 1926 में यूरोप की यात्रा का i̥ gyk i̥ Mko ml̥gkus bVyh e̥ gh MkykA ogka l̥ s M; d̥ c̥suVks e̥l̥ kfuyh l̥ s feys v̥kj ck̥s d̥hA bVyh l̥ s os fLoVtjyM Qkd b̥kyM v̥kj ukos x, A ukos l̥ s os LohMu Muekdz teLuh pdkt̥Lykpfld; k v̥kFLVz k g̥xjh ; k̥k̥lykfo; k c̥Yxkfj; k v̥kj : efu; k x, A Hkkj r̥ os xh̥l̥ l̥ s jokuk हुए। यह पूरी यात्रा 1926 में मई से नवंबर तक चली। 1927 में रवीन्द्रनाथ जावा और इंडोनेशिया की ; k=k i j x, A 1929 e̥ bl̥ ds ckn os dukMk d̥h; k=k i j x, v̥kj bl̥ ds vr̥ e̥ rh̥l̥ jh̥ ck̥ tki ku गए। कनाडा में उन्होंने अपना प्रसिद्ध 'अवकाष' का दर्शन किया।

1926 और 1930 के बीच रवीन्द्रनाथ की अनेक प्रसिद्ध प्रकाषित हुईं। काव्य संग्रह 'महुआ', 'योगायोग' और 'राजा dfork^ miU; kl ḥi rh^ vkg ḥdbz ukVd vkg I ḥhfrd ukVd ^\_rjx^ प्रकाषित हुइA bl ds vykok mlgkus dbz I ckkku vkg yf[k r̄ kj fd, A 1930 ei os i ip% bkySM i qoA bl ckj nsu; k dks johUnukFk ds , d vkg jpuKRed iqy dk ifp; feykA ifjl ei

muds चित्रों की प्रदर्शनी लगी। साठ साल dk; q ds ckn j ohUnukFk us fp=dkj h dh dyk e dke ष्ट् fd; kA मास्को में रवीन्द्रनाथ तकरीबन पंद्रह दिन रुके। उनके चित्रों की एक प्रदर्शनी वहां लगी उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों के ख्यातिलब्ध व्यक्तियों के साथ विचार विमर्श किया। उनकी 'रूसेर चिठि' इस ckr dk i ek.k gfs fd ijs देष ds Lrj i j fd, tk jgs i z kl k dh , drk l s os fdrus xgjs e k gq FkA अपने चित्रों को लेकर वे रूस से अमरीका गए। पछिम की इस अंतिम यात्रा से जनवरी 1931 e os Hkkj r yk v k, A

b1 ds ckn nks vol jk i j os Hkkj rh; mi egk}hi ds ckgj x, 1932 e Qkj l v k bjk d v k 1934 e fl ykuA l ukj l ky ds o) dfo us fl rcj 1931 e fgtv h ty ds dfn; k i j xkyh l kyk ds fojk k e dydük e v k; kfr , d l Hkk dh v /; ftrk dhA 1931 e johUnukFk tc l ukj o" के हुए तो देषवासियों ने बड़े स्तर पर इसे मनाने के लिए समारोह आयोजित किया।

कलकत्ता विष्वविद्यालय ने अनेक रूपों e johUnukFk dks l Eekfur fd; kA 1921 e i gyh ckj txrrkfj. k l nd johUnukFk dks i nku fd; k x; kA l kfgR; ds fl ) k i j , d o; k[; kuekyk ds fy, mlg s ckyk; k x; kA os ekuo /kz ds ckjs e ckyA bl i j nks l kyk i gys Hkh v kDl OkMz e fgcVl yDol l e os cky चुके थे। 1932 में रवीन्द्रनाथ ने कलकत्ता विष्वविद्यालय के प्रोफेसर dk i n

Lohdkj fd; k , johunukFk विष्वविद्यालय के क्षेत्र& i dks ds i j h k d jgs v k 1938 es ckyk e nh{kk r l ekjkg e इतिहास का निर्माण किया। उनके अपने विष्वविद्यालय में दो बड़े विभागों चीना भवन (1937) और हिन्दी भवन (1938) को उद्घाटन हुआ। रवीन्द्रनाथ की बारंबार विदेष यात्राओं के चलते इस संस्थान के उद्देष्य का क्षेत्र विस्तार और दूरगामी महत्व के उद्देष्यों का सूत्रीकरण हो सका। रवीन्द्रनाथ ने विष्वभारती के लिए यात्राएं की लेकिन अपनी जीवन—केंद्र से कभी विचलित नहीं gq A

1932 के बाद रवीन्द्रनाथ ने भी 'पुनर्ज्ञ' संग्रह की कविताव्याप्ति ds l kfk e f y [ku k'ष्ट् fd; kA इस दशक में रवीन्द्रनाथ के कुल कविता संग्रहों की संख्या पंद्रह है जिनमें से 'पुनर्ज्ञ' (1932) k l lrd^ 1/1934^, i = 1/1936^, घामली' (1936) मुक्त छंद हैं। सूक्ष्म अवलोकन से जाहिर होता है fd johUnukFk dk ekul , d xgjs i fforu l s xitj jgk FkA tc 1860 e johUnukFk Vxkj dk tle gmk ml l e; Hkkj r ds jk"Vh; v kUnksu py jgk FkA vxth thou i ) fr dk fojk k gks jgk FkA rFkk Hkkj rh; l Ldfr dh v k jekt dks c<kok fn; k tk jgk FkA ml l e; dh Vxkj nkjk fy [kh x; h l kfgR; भी देष प्रेम तथा बंगाली जबान के प्रेम में ओत प्रोत था। षिक्षा के सम्बन्ध e l qk j ds muds fopkj 1901 l s 1905 में अधिक तेजी से बढ़े। इस समय अंग्रेजी षिक्षा पद्धित जो केवल ऊँचे वर्ग के लिए थी उसमें सुधार की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी।

रवीन्द्रनाथ टैगोर दूरा बहुत सी साहित्य बंगाली में लिखा जा रहा परन्तु विदेषी लोगों को ष्ट् flur निकेतन तथा विष्व भारती में सEckf/kr djus e og v kstl dk l gkjk yrs fls bl ds vfrfjDr muds अनेक लेख तथा निबन्ध भी विभिन्न पत्रिकाओं में छापे जा रहे थे। परन्तु षिक्षा को उन्होंने v kstl t xg {k=; cky; k को माध्यम बनाने की वकालत की थी। उनके षिक्षा सम्बन्धी विचारों को टैगोर का विचार था कि भारत की उन्नति में षिक्षा की एक बहुत बड़ी बाधा है। उनके अनुसार अंग्रेजी दूरा i k j EHk की गई षिक्षा नीति बहुत असन्तोष जनक है। क्योंकि इसका उद्देष्य केवल अंग्रेजी प्रथा चलाने के लिए कुछ लोगों को षिक्षित करना है। जबकि षिक्षा का उद्देष्य होता है कि षिक्षा दूरा बच्चे में रचनात्मकता स्वतन्त्रता प्रसन्नता और जागरूकता की भावना पैदा हो तथा उसे ऐसी षिक्षा मिले जिससे वह अपने देष की सांस्कृति पर गर्व कर सके। mudk fopkj FkA fd v kstl cky में षिक्षा के dkj .k fo l kfkz dks v kstl dk Klu i klr djus e Hkkh cgf v f/kd i fje djuk i Mfk gA rFkk दूसरी ओर इसके कारण भारतीय समाज दो वर्गों में विभाजित होता है। जिन लोगों ने अंग्रेजी षिक्षा i klr dh gfs rFkk ftu ykxks us v ksmji षिक्षा प्राप्त करने वाला वर्ग ष्ट् gj es fuokl djrk gfs v kstl षिक्षा में वंचित वर्ग xk rFkk Nk/s ft yk e cl rk gfs ft l s nfu; k ds ckjs e dkbl Kku ugha i klr gk gA

टैगोर का विचार था कि भारत में शिक्षा की व्यवस्था इस प्रकार की होनी चाहिए जिससे ग्रामीण vpy Hkkfor gks l ds mUgkus Hkkjrh; l dfr dks vi ukrs gq i kphu le; dh xq dly i) fr dks vi uk; k rFkk 1901 e; 'kflUr fudru dh LFkki uk dhA mUgkus bl es cPps dh ekr' ckyh को शिक्षा का माध्यम बनाने पर बल दिया परन्तु अपने इस स्कूल में उन्होंने विज्ञान तथा अन्य नये i kB को भी अपनाया। उनका विचार था कि अगर शिक्षा को सामान्य lask rd i gpkuk gS rks {k=h; cky; k को प्रारम्भिक शिक्षा का माध्यम बनाना चाहिए। रवीन्द्रनाथ टैगोर का कहना था कि ^ ; fn ge pkgrs gfd Hkkjrh dh bl l k/kuk से छात्रों को षिक्षित करना हमारी शिक्षा का प्रधान लक्ष्य rks ges; g /; ku e; j [kuk gkxk fd gekjs विद्यालयों में केवल इन्द्रियों की शिक्षा नहीं वरन् बुद्धि की शिक्षा को प्रधान स्थान देना होगा।'

अर्थात् भारतीय शिक्षा व्यवस्था शिक्षा कारखानों की शिक्षा नहीं स्कूल कालेजों की परिक्षाएं पास करने की शिक्षा नहीं केवल बोध दृष्टा जो ज्ञान होता है वह परिपूर्ण हैं। tks l cl s vf/kd egRoi wkl gS ml dh l cds chp cky nkjk vuHko djuk; gh gS Hkkjrh l k/kuk johUnukFk th dk fopkj Fkk fd भारत के विद्यालय कैसे होने चाहिए इस बात का आदर्श हमें सामने रखना होगा। उनका कहना था कि हमें दूसरे देषों का आँख बंद करके अनुकरण नहीं करना चाहिए क्योंकि एक देष का सम्बन्ध क्योंकि एक देष का सम्बन्ध इस देष में लेन देन पर आधारित करता है यदि भारतियों को केवल अंग्रेजी शिक्षा पर निर्भर किया गया तो भारतीय केवल विदेशी के बाजार में मजदूरी करने लायक बन l drs gA bl ds vykok muds i kl dkbl ekxI ugh gkxKA johUnukFk Vkkj th dk fopkj Fkk fd हम बी०ए० एम० ए० पास करते रहे पुस्तकों के ढेर के <j fudyrs jgs ij gekjh cky) d rkdr i fj i Do ugh gkrti dkbl jpuK ge ugh dj i krA gekjs fopkj i fj i Do ugha gks i krs gS bl dk कारण यही है कि हमारी शिक्षा में बच्चा u e; gh vkulln ds fy, LFkku ugh gkrk ge doy d. BLFk dj yrs gA bस समय स्वाभाविक नियम में ग्रहण फ़ा vkJ fplrk 'फ़ा Hkk l dy gkrti gS l Ei wkl जीवन में शिक्षा का सम्बन्ध नहीं होता यह अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का परिणाम है। यह केवल व्यवसाय rd l hfer gA

johUnukFk टैगोर जी का मानना था कि अगर शिक्षा जनसाधारण तक पहुँचानी है तो अत्यन्त आवश्यक है कि क्षेत्रीय cky को शिक्षा का माध्यम बनाया जाये। रवीन्द्रनाथ टैगोर का विचार था कि शिक्षा या विद्या संजीवनी है इसी विद्या में जीवन रक्षा होती है जीवन 0; rhr gkrti gS nqkfo nj gkrti gS vlu 0L= vkJ LokLFk ds vHko l s Nvdkj feyrk gS tho tUrq vkJ bl ku ds vr; kpkj l s रक्षा होती है। पञ्चमी जगत में पोलिटिकल स्वतन्त्रता का विकास तब में आरम्भ हुआ जब यह बात l e>h xbz fd देष के कानून 0; fä; k l ink; ij vkJ/fj rh u gkdj og fu; e l Hkk dh l EefRr ij vkJ/fj rh gA mudk dguk Fkk fd ^ vkJ dy ge ft l s एजूकेशन कहते हैं उसका आरम्भ फ़gj में होता है व्यवसाय और नौकरी उसके पीछे-पीछे चलते होगे उनका मानना था कि आवश्यकता है स्कूल कालेज के बाहर शिक्षा का विस्तार साधनक l kfgR; gA

johUnukFk Vkkj dk fopkj Fkk fd ft l idkj jktuhfrd {k= e; ge LojKT; i llr djuk pkgrs हैं उसी प्रकार हमें शिक्षा के क्षेत्र में स्वराज प्राप्त करने का उत्साह दिखाना चाहिए। स्कूल के सम्बन्ध में टैगोर जी के विचार थे कि स्कूल की स्थापना सुनसान स्थान पर खुले आकाश के नीचे होनी pkfg, ft l ds pkjka vkJ pkj nhokjh gks rFkk cgqr vf/kd l q; k e; i M+ i kks yxs gks rklfd i dfr की सुन्दरता के बीच आनन्दमय स्थिति में शिक्षा प्राप्त की जा सके उनका कहना था कि जिसे योरोप e; fuofl Mh dgk tkrk gS og ; k jk dh gh phit gA ; fuofl Mh dk i fke i fr; lk Hkkjrh e; gh ns[kk x; k FkkA ukyllnk vkJ तक्षणिला के विष्व विद्यालय प्राचीन काल में ही भारत में मौजूद थे। जहाँ शिक्षा के साथ विद्यार्थियों का प्रकृति से अच्छा सम्बन्ध स्थापित रहता था तथा इन्द्रियों को भी fodfl r o i fj i Do gkus dk vol j feyrk FkkA muके विचार में भारत में शिक्षा यहाँ की चारित्रिक xqkka rFkk fodfl r l H; rk dks /; ku es j [kdj dh tkul pkfg, FkkA tks u doy 0; ol kf; d gk न केवल साम्राज्यवादी हो न केवल देष rd सीमित हो वरन् सार्वभौमिक शिक्षा हो जिसका उद्देश्य व्यक्तित्व का। Ei wkl fodkl gkuk pkfg, 0; fDr

रवीन्द्रनाथ टैगोर संयं स्कूल के अध्यापक थे वह अतः षिक्षण पद्धित पर भी उन्होने अपने प्रयोग किये एक विष्व विद्यालय की स्थापना की जानी चाहिए। जिससे उग्र रा"Vdkn dks l ekir fd; k tk l dA 1913 के उपरान्त की विदेष यात्राओं से उनको ज्ञान हुआ कि दूसरे देशों में किस प्रकार की गतिविधियाँ हो रही हैं। विदेशों में उन्होने अनेक विद्यालयों से मुलाकात की तथा इस निर्णय पर पहुँचे कि विभिन्न देशों में मानवता षिक्षा तथा सांस्कृतिक के क्षेत्र में एकता स्थापित करने के प्रयत्न किये तkus pkfg, cPpk rFkk xग्रामीण क्षेत्रों की षिक्षा के सम्बन्ध में उनका विवाद था कि गाँव को एक विष्वविद्यालय का रूपै देकर प्रकृति के साथ रहकर ही गाँव वालों को षिक्षा प्रदान की जा सकती है। रवीन्द्रनाथ टैगोर का विचार था कि भारत में दी जाने वाली षिक्षा में जो स्कूल या विष्वविद्यालय तक नहीं आती है तब तक उसके ग्रामीण जीवन की जरूरतों की षिक्षा जैसे बर्तन बनाने, की षिक्षा खेती की षिक्षा आर्थिक स्वास्थ दवाओं आदि के बारे में नहीं पढ़ाया जायेगा तब तक वह षिक्षा भारत के लिए उपयोगी नहीं हो पायेगी। विष्व भारती को स्थापित करने में उनका उद्देश्य ग्रामीण dks l Lrhi तथा उद्देश्यपूर्ण षिक्षा प्रदान करना था। उनका मानना था कि अंग्रेजी षिक्षा से हमारे देश में गरीबी rFkk'षक्ति हीनता पैदा हो रही है तथा इन षिक्षा द्वारा समाज षिक्षित तथा अषिक्षित दो वर्गों में बट jgk gA mudk fopkj Fkk fd thou dks LoLFk rFkk षिक्षित बनाने के लिए तकनीकि तथा विज्ञान की षिक्षा दी जानी चाहिए परन्तु विज्ञान के साथ भारतीय दर्शन तथा धार्मिक षिक्षा भी विष्वविद्यालयों eI nh tkul pkfg, A उनका विचार था कि जब योरोप में विष्वविद्यालय आरम्भ हुए उससे पहले से भारत में नालन्दा विक्रम षिला जैसे विष्वविद्यालय मौजूद थे जिनमें बुद्ध के समय विद्यालयों द्वारा षिक्षा प्रदान की जाती थी। इनमें षिक्षा प्राप्त करने के लिए एषिया के दूर देशों से थि"; vklrs Fkk tC योरोप में विष्वविद्यालय स्थापित किए गए उस समय धर्म के विरुद्ध आन्दोलन हो रहे थे अतः धार्मिक षिक्षा का विरोध हो रहा था आधुनिक विष्वविद्यालयों में सामाजिक विज्ञान के बारे में षिक्षा दी जानी थी। जिसको विद्यालय विभिन्न देशों से प्राप्त करते थे तथा उसका विकास करके पीढ़ी दर पीढ़ी उसका ज्ञान दिया जाता था। परन्तु समकालीन भारतीय विष्वविद्यालय में समस्त देश की रा"Vh; l Ldfr ds बारे में षिक्षा नहीं दी जाती तथा विदेशी विज्ञान से भी उनका कोई सम्बन्ध नहीं था भारतीय गाँव vKhh Hkh vKku ds vU/kdkj eI Mics gjq Fkk अंग्रेजी का विष्वविद्यालय स्तर पर प्रयोग के सम्बन्ध में रवीन्द्रनाथ टैगोर जी का विचार था कि क्षेत्रीय विष्वविद्यालय से सम्बन्धीय जबान में षिक्षा प्रदान की जाये तो वह अधिक उपयोगी होगी। उनका मानना था कि सरकार कोर्ट में तथा षिक्षा के लिए जिन tckuls dk i; kx dj rh gS og tul k/kkj .k ds l e> ds i js gS tcfd tkiku rFkk : l eI jdkj cgr de l e; eI gh ylkxks dks mudh nशीय जबान में षिक्षित कर लेती है। भारत में पूरी जनसंख्या को षिक्षित करने के लिए आवश्यक है कि षिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय tcku eI gh j [kk tk, A 'rkkUr fudru%

'षातिफुद्रु 1901 l s 1921 rd fodfl r fd; k x; k bl s i kFkk Hkou dgk tkkrk Fkk tks dydUkk विष्वविद्यालय से सम्बन्धीय जबान में षिक्षा प्रदान की जाये तो वह अधिक उपयोगी होगी। उनका मानना था कि सरकार कोर्ट में तथा षिक्षा के लिए जिन tckuls dk i; kx dj rh gS og tul k/kkj .k ds l e> ds i js gS tcfd tkiku rFkk : l eI jdkj cgr de l e; eI gh ylkxks dks mudh nशीय जबान में षिक्षित कर लेती है। भारत में पूरी जनसंख्या को षिक्षित करने के लिए आवश्यक है कि षिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय tcku eI gh j [kk tk, A 'rkkUr fudru%

V\$kj th dk ekuuk Fkk fd xkeh.k {ks= es jguokys cPpk ds fy, dN vyx i dkj ds fo | ky; तथा षिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए जो गप ds thou es। Ecfl/kr हो अतः क्षुर dudru ds dN ghi nj ij mlgkus। पुः y uked LFkku ij Hkfe [kjhn rFkk 1921 es V\$kj th dh fyukMZ , EgLVZ में यूनाइटेड स्टेट में मुलाकात हुई जो उस समय कोनवेल विष्वविद्यालय में [krh foKku ds ckjs es षिक्षा प्राप्त कर रहे थे तथा भारत के ग्रकेह.k {ks=k ds ckjs es Kku i klr djuk pkgrs FkA V\$kj us muds l kfk feydj dN i kx fd, A og pkgrs Fks fd, egLVZ xpo dh | eL; kvks dks nj djus ds mik; crk; s ft | s xpo es ykxks dh vk; dks c< k tk | ds rFkk muds thoues i l ljurk ykbz tk | dA V\$kj ने षिक्षा क्षुर= नामक विद्यालय खोले जिनके द्वारा ग्रामीण बच्चों की ऐसी षिक्षा nh tk | ds ft | s mudk | Ei wL fodkl gks rFkk og vPNh thfodk i kstL dj | dA , egVZ ds | g; kx | s johUnukFk V\$kj us Hkfe dks vf/kd mi tkA cukus dk i ko/kku fd; kA johUnukFk th | eLr [krh षिक्षा स्वास्थ और सामाजिक जीवन के सुधार करना चाहते थे। [krh ds | Ecl/k es i kx fd, x, ftudk Qy Hkh xkpk dks feykA LoLFk jgs ds fy, eyfj; k t h chekfj; k dks l ekkr djus dk i Ru fd; k x; kA fo | ky; knjk xkeh.k dh foHkku | eL; kvks dks gy djus dk i kx fd; k x; kA , d LdkmV i kxke nkjk xpo dk fodkl djus dk i Ru fd; k x; kA श्रीनिकेतन में हस्तषिल्प कला को प्रोत्साहन दिया गया यह आवश्यक था कि प्रत्येक विद्यार्थी कोई न कोई हस्तषिल्प की षिक्षा प्राप्त करें। सिंचाई तथा अनाज देने के लिए बनाई गब्ज Mjh QkEl बनाये गये पषुओं के लिए चिकित्सालय बनाये गये। गाँव वालों के लिए गाँव में उद्योग लगाये गए ft | s mudh thfodk c< | dA xpo ds fy, dY; k.kdkjh foHkx dh LFkki uk dh xbz ft | us | koltud fgr ds dk; l fy, xpo okf | k dks ds fy, pyrs fQj rs i lrdky; LFkkfir fd, x, A Lkekftd | kldfrd dk; bde fd, x, LokLFk ds fy, Dyhfdud cuk; s x; s 1940 es cPpk ds fy, vLirky dh LFkki uk dh xbzA

‘गतिनिकेतन का उद्देश्य था कि कार्य में आनन्द प्राप्त हो। पिकनिक, [ksy, 0; ki kj, l xkr, ukVd rFkk l kekftd o /kkfebd R; kgkj k dks euk; k tkus yxkA uo \_rq ds vkxeu cl Ur euk; k tkus yxkA” xkeh.k thou es bu R; kgkj k es खुशी mRiUu gbj” Hkfe thrus dk R; kgkj rFkk ouegkbl o ¼ i M+yxkus dk R; kgkj Hkh euk; k tkus yxkA ½ Lkyks rd V\$kj us vi us yskks ukVdka dforkvk dkgfu; knjk xpo ds ykxks dks u; s rjhdks dks vi ukus ds fy, i kfr kfgr fd; kA V\$kj nkjk vi uk; s x; h uhfr; k i j gh i kpk | ky ds i kxke vkkfjr gq FkA ft | es xkoks dks fodfl r fd; k tk | dA i Hkko%&

टैगोर के सहयोगी सी० एफ० एनझूज विलियम पियरसन और लिनोर्ड एमंहर्स्ट तथा अनेक और विद्वान टैगोर द्वारा बुलाने पर क्षुर fudru es v/; ki u gq vk; s FkA V\$kj us fo | kFkz k ds fuokl djus okys fo | ky; k dh LFkki uk dh mudh dguk Fkk fd ^ es अपनी संस्था की स्थापना क्षज्जि | s nj , d l luj LFkku ij dh gS tgk fo | kFkz LorU=rki ob jg | drs gS rFkk i kphu o{kks dks uhips षिक्षा प्राप्त कर सकते gS lkdr | s | Ecl/k LFkkfir djds l kekftd | Ecl/k ds ckjs es tkxr gkaj साहित्य त्योहारों धार्मिक षिक्षण द्वारा johUnukFk V\$kj us fo | kFkz k dh vkrek dks t xkus dk i kx fd; kA

V\$kj ds fopkj : l ks Qkcsy Moks ekVj jh vkfn es feyrs t yrs FkA muds xkeh.k fo | ky; k ds सम्बन्ध में विचार गाँधीजी से प्रभावित थे। जिनको कोठारी कमीषन ने अपनाया है टैगोर का ekuuk था कि षिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के जीवन को सम्पूर्णता प्रदान करना है। यद्यपि इसके उद्देश्य जीविका प्राप्त करना भी है। जिसके बिना व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता है।

टैगोर का मानना था कि षिक्षा केवल बुद्धि की उन्नति का मार्ग नहीं है वरन् षिक्षा द्वारा fo | kFkzA dykRedrk dh i Lrfr rFkk jpukRedrk dh i dfr rFkk jpukRedrk Hkh mRiUu gkui pkfg, A षिक्षा द्वारा व्यक्ति में मानवताए स्वतन्त्रता तथा एकता उत्पन्न होनी चाहिए। इनके द्वारा ही षिक्षा सार्थक है तथा जीवन को अर्थ प्रदान करती है। अंग्रेजी राज्य में षिक्षा का उद्देश्य केवल जीविका

प्राप्त करना था। वह इस गलत उद्देश्य को ठीक करना चाहते FKA og foKku rduhfd rFkk [kr] foKku ds | kFk gLRkdyk foKku dks Hkh i[k] kgu nuk pkgrs Fks ft | ds fcuk xkp mUur ugh jg | drs FKA

V\$kj us देशीय जबान को शिक्षा का माध्यम बनाने पर बल दिया वह विष्वविद्यालय तथा समाज में एकता स्थापित करना चाहते थे तथा उन्होंने ग्रामीण अंचल की शिक्षा को बहुत महत्व दिया। उन्होंने महिला शिक्षा पर भी बहुत बल दिया। उनके FkflUr fudru e[ fo | kFkh yMfd; k dh | a; k yMdk से अधिक रहती थी। सैद्धान्तिक शिक्षा में उन्होंने लड़के लड़कियों को समान शिक्षा देने पर बल दिया परन्तु प्रयोगात्मक शिक्षा दोनों के लिए अलग—अलग होती थी क्योंकि जीवन में उन्हें अलग प्रकार का jky djuk i Mfk FKA टैगोर शिक्षक को बहुत महत्व देते थे उनका मानना था कि जिस प्रकार एक ekyh i kks dk पनपने का मौका देता है उसी प्रकार शिक्षक को अपने विद्यार्थियों को पनपने का vol j i nku djuk pkfg, A

वह चाहते थे कि भारतीय युवा शिक्षा द्वारा और अधिक तार्किक बन सके तथा रुचियों और सामाजिक कुरीतियों को मानना छोड़ दें। टैगोर चाहते थे कि उनके “; oKkfud fopkj k dks ekuus yxs rFkk muds fopkj e[ j pukRedrk | kgl rFkk [krjks dk | keuk djus dh fgEer i hik gks vks og vi us | kgl I s nfu; k dks th[ | dA og fdl h Hkh i dkj dk n.M nus ds fo: ) FKA

V\$kj dk fopkj Fkk fd ml ds fo | kFkh i jh ekuork ds ckjs e[ fopkj Fkk muds fo | kFkh i jh ekuork ds ckjs e[ fopkj djus ; k; cf); rk i hik djs rFkk देश के f; okn dh {k} Hkkouk I s Åij mBdj muds समान पूरे विष्व के कल्याण के बारे में विचार करने योग्य बन सके। जिससे विष्वबनधुत्व की भावना पैदा हो।

1941 e[ V\$kj dk fu/ku gks x; k mUgkus vi us thou dky e[ tks fo | ky; [kksys muds Hkk”kk, संगीतए हस्तषिल्पए कलाए नाटक की भी शिक्षा दी tkrh FkhA ‘षान्ति निकेतन शिक्षा’<sup>1</sup> Jh fudru dyk Hkou rFkk I xtr Hkou ds vfrfjDr mUgkus phuk Hkou Hkh [kksy k ft | es phuk tcku i <k> जाती थी। हिन्दी भवन तथा इस्लाम की शिक्षा के लिए भी विद्यालय खोले तथा विष्व में एकता LFkkfi r dus e[ vi uk egku ; kxnu fn; kA

dN fnuks I s yxkrkj dfo dks vi uh c<fr dk vgl kl gks jgk FkkA fl rcj 1940 e[ os dfyia kx ?kpus x, A ogha os chekj i M+ x, A rHkh I s mudk LokLF; o) koLFkk ds dkj.k [kjkc gkuk ‘<sup>2</sup> gks x; kA 25 tgykb] 1941 dks ‘kkrfudru I s mUgks dydUkk yk; k x; kA ogha tkmH kdkks ds i f'd vkokl e[ mUgkus 7 vxLr 1941 ½21 Jko.k 1348 cakCnH dks vfre | kd yhA

## **BIBLIOGRAPHY-**

- 1<sup>st</sup> Rabindranath Tagore – ‘My School, in Personality’ London Macmillon 1917.
- 2<sup>nd</sup> Rabindranath Tagore- Shiksha Herpes 1892 [ in Shiksha ] ‘A Collection of Essays on Education’
- 3<sup>rd</sup> H. B. Mukharjee. ‘For an Account of Education under British Rules’ Bombay, Asia 1962.
- 4<sup>th</sup> ‘Tapovana’- in Tagore Shiksha.
- 5<sup>th</sup> Sudhir Sen - Ranbindranath Nath Tagore on Rural Reconstruction.
- 6<sup>th</sup> Shantaniketan Vishva Bharti 1943.
- 7<sup>th</sup> आबर्टन हाल— वाई० एम० सी० ए०
- 8<sup>th</sup> दिसम्बर 1909 में प्रकाषित
- 9<sup>th</sup> I k/kuk 1892 ०१ प्रकाषित
- 10<sup>th</sup> Pushpendra T. - 2013 Rabindranath Tagore’s ‘Philosophy of Education and its Influence on Indian Education.
- 11<sup>th</sup> ‘Introduction Journal of Current Research and Academic Review’.
- 12<sup>th</sup> Tagore, Rabindranath 1917, My Reminiscence, Newyork, The Macmillon Company.
- 13<sup>th</sup> Tagore, Rabindranath 1929 ‘Ideas of Education, The Vishva Bharti Quarterly (April-July).
- 14<sup>th</sup> Tagore Rabindranath 1961- Towards Universal Man Newyork, Asia Publishing House.
12. Rabindranath Tagore, Dutta & Robinson, 1997
13. Tagore Rabindranath, 1978 ‘On the Edges of Time’- Greenwood Press
14. DasGupta T. 1993 ‘Social Thoughts of Rabindranath Tagore’
15. Ramachandra Guha, 2011, ‘Makers of Modern India’ Cambridge Belknap Press of Harvard University.
16. Dutta Krishna, Robinson Andrew, 1917 ‘Selected Letters of Rabindranath Tagore’, Cambridge University Press.